# एल: ''परमेश्वर''

पुराना नियम हो या नया, किसी में भी मनुष्य या ईश्वर का नाम बिना विशेष अर्थ के ढूंढ़ना कठिन होगा। फिर, यह अहसास होने पर कि बाइबल कितनी सावधानी से लिखी गई है, हमें विशेष रूप से पता चलता है कि परमेश्वर का कोई भी नाम या संकेत विशेष महत्व रखता है। अगले पाठों में पुराने नियम में परमेश्वर के विभिन्न नामों तथा व्याख्याओं को दिखाने की कोशिश की गई है। नामों के विषय में परमेश्वर के अपने चयन से हम जान सकते हैं कि उसके लोगों द्वारा उसे दिए जाने वाले नामों का कितना विस्तृत अर्थ है। उन नामों का किसी शो केस में पड़े कीमती मोतियों की जांच करने की तरह अध्ययन करने से परमेश्वर के बारे में और गहराई से जाना जा सकता है।

इब्रानी भाषा में परमेश्वर के लिए सामान्य पदनाम संज्ञा मूल *'El* (एल) *अथवा 'Eloh* (एलोह) पर आधारित है। *im* को एक इब्रानी पुलिंग एकवचन संज्ञा के साथ जोड़ने पर बहुवचन बन जाता है; इस प्रकार हमें *'elohim* (एलोहीम) शब्द मिलता है। ''संज्ञा का रूप बहुवचन है, परन्तु प्रतीक एकवचन है। कई बार इसे 'राजा का बहुवचन' कहा जाता है।''[1] पुराने नियम में हर जगह स्पष्ट किया गया है कि केवल एक ही परमेश्वर है और वह बहुदेववाद की मूर्तिपूजा की बात को रद्द करता है। इस कारण इस संज्ञा मूल पर आधारित परमेश्वर के पदनामों की समझ होनी आवश्यक है।

## (*एलोहीम*) *इलोहीम*: ''परमेश्वर''

पुराने नियम में परमेश्वर का सबसे पहला वर्णन उत्पत्ति 1:1 में मिलता है: ''आदि में परमेश्वर [*एलोहीम*] ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।''

### ''परमेश्वर'' शब्द का अर्थ

*एक गलत धारणा।* कई लोग परमेश्वर के लिए अंग्रेज़ी के शब्द ''God'' और ''good'' को आपस में जुड़ा हुआ मानते हैं। निश्चय ही, अंग्रेज़ी में इन दोनों शब्दों के जोड़ अर्थात अक्षर काफी मिलते-जुलते हैं। उत्पत्ति 1:1 पर एडम क्लार्क ने टिप्पणी की है कि ऐंगलो-सैक्सन शब्द ''god'' ईश्वर और भलाई दोनों का ही अर्थ देता है। बाइबल के परमेश्वर पर विचार करने पर, समझ आ जाता है कि ''God'' शब्द की अच्छाई से क्या समानता है, क्योंकि बाइबल का परमेश्वर भलाई का सार है। दाऊद ने पुकारकर कहा था ''परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है,'' (भजन संहिता 34:8)। बाइबल के बाहर के, ''gods'' भले नहीं थे। यदि ''god'' शब्द भलाई का संकेत देता है, तो अन्यजातियों के

देवताओं के लिए इस्तेमाल करने पर इसका बड़ा दुरुपयोग होता है। यूरेनुस के विषय में कहा जाता है कि वह अपने बच्चों से घृणा करता था और उसने उन्हें बन्दी बनाकर रखा हुआ था। कहानियों से पता चलता है कि जूपिटर ने ''देवताओं का राजा बनने के लिए'' अपने पिता को कैसे नीचे गिरा दिया था। मूर्तियों के देवताओं को महत्वाकांक्षी, झगड़ालू और कामुक दिखाया जाता था।

परन्तु जिस *एलोहीम* शब्द को उत्पत्ति 1:1 में प्रयुक्त किया गया है उसका उस शब्द से कोई सम्बन्ध नहीं है जिसका अर्थ ''good'' है। ''Good'' अर्थात भला शब्द इब्रानी भाषा के *tobh* से लिया गया है जैसे कि उत्पत्ति 1:4 में मिलता है: एलोहीम, अर्थात परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि *tobh* (तोभ) है अर्थात अच्छा है। संयोग से अंग्रेज़ी के शब्द ''god'' और ''good'' के अक्षर एक जैसे हैं, परन्तु इब्रानी शब्द जिससे ये लिए गए हैं, उसके अनुसार ये आपस में बिल्कुल नहीं मिलते हैं।

*''god'' शब्द का अर्थ है जिसकी अराधना होनी हो।* अंग्रेज़ी शब्दकोष ''god'' शब्द के मूल अर्थ ''सहायतार्थ बुलाना, आराधना करना'' तक ले जाता है; जिससे आभास होता है कि ईश्वर की आराधना होनी है। इसी प्रकार एलोहीम शब्द से सम्भवत: क्रिया अलाह [जैसे इस्लामी नाम ''अल्लाह'' में देखा जाता है] है, जिसका अर्थ है ''भय से आगे-पीछे जाना।'' इस शब्द का अर्थ ''आराधना करना'' हो चुका है।

मूल रूप में ''भय'' शब्द में पाया जाने वाला डर आराधना योग्य उस महान जीव के प्रति भय तथा भक्ति की भावना से अलोप हो गया। जिसका कारण यह हुआ कि परमेश्वर का भय रखने का अर्थ परमेश्वर की आराधना करना है। मूसा ने लिखा था, ''अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना'' (व्यवस्थाविवरण 6:13); परन्तु मूसा के वाक्य को उद्धृत करते हुए यीशु ने ''भय'' शब्द का अर्थ इसके सही संदर्भ में यह कहते हुए बताया, ''कि तू प्रभु अपने परमेश्वर ... की उपासना कर'' (मत्ती 4:10)। ''परमेश्वर'' शब्द ''भय'' के लिए शब्द *yare'* (येअर) से निकला है और ''भय'' शब्द का इस्तेमाल आराधना के भाव में किया जाता था, इसलिए ''परमेश्वर'' शब्द और आराधना के विचार का निश्चय ही आपस में सम्बन्ध है।[2]

*आराधना के योग्य एक मात्र जीव।* जैसा कि उत्पत्ति 1:1 में प्रयुक्त हुआ है ''परमेश्वर'' शब्द केवल आराधना के योग्य जीव ही नहीं बल्कि आराधना के योग्य केवल एक जीव की बात है। उत्पत्ति 1:1 में परमेश्वर के केवल एक होने की बात को बाद में दस आज्ञाओं में से पहली आज्ञा में लिखा गया था: ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना'' (निर्गमन 20:3)। ''अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना'' वाक्य (व्यवस्थाविवरण 10:20) में, यीशु ने यह विचार व्यक्त किया कि लोग ''केवल'' शब्द के अर्थ को समझते थे। यह कहकर कि ''तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'' (मत्ती 4:10) उसने वही बताया जो इसका अर्थ था। इस प्रकार पुराने नियम में परमेश्वर की व्याख्या पाठक को यह समझाने के लिए की गई थी कि संसार में आराधना के योग्य केवल एक ही है।

### *एलोहीम* शब्द की बहुसंख्या

मूसा के लेखों में ''god'' से ''gods'' की तरह ''s'' जोड़कर एकवचन से बहुवचन नहीं बनाया गया था। उनमें ''im'' (ईम) जोड़कर बहुवचन बनाए गए थे; इसलिए *एलोहीम* एक बहुवचन शब्द है।[3] परन्तु, जब *एलोहीम* शब्द को एक सच्चे और जीवते परमेश्वर के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तो अनुवादक अंग्रेज़ी के एकवचन शब्द ''God'' को इब्रानी के बहुवचन शब्द के समान मानते हैं। संदर्भ से तय होता है कि उत्पत्ति 1:1 की तरह एक ही जीवते परमेश्वर की बात हो रही है या नहीं। निर्गमन 20:3 का संदर्भ अलग है। वहां शब्द एलोहीम ही मिलता है परन्तु संदर्भ से पता चलता है कि वहां पर बहुवचन में ईश्वरों की बात है: ''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर [एलोहीम] करके न मानना।''[4]

इस पर काफ़ी चर्चा हो चुकी है कि पुराने नियम में परमेश्वर की व्याख्या के लिए बहुवचन शब्द का इस्तेमाल क्यों किया गया। अज्ञानी व नास्तिक व्यक्ति इतना सा अल्प ज्ञान होने पर इसे प्राचीन बहुदेववाद के ''प्रमाण'' के रूप में इस्तेमाल करने का उतावलापन दिखाते हैं, परन्तु पुराने नियम के किसी सचेत छात्र ने कभी पवित्र शास्त्र पर ऐसा आरोप नहीं लगाया। उत्पत्ति 1:1 में जिस सृष्टिकर्त्ता की बात कही गई है उसे पवित्र शास्त्र में आगे भी ''एक'' ही परमेश्वर कहा गया है (व्यवस्थाविवरण 6:4) अर्थात उसे छोड़कर ''कोई परमेश्वर है ही नहीं'' (यशायाह 44:6)। इसके अलावा, इब्रानी शास्त्र में उत्पत्ति 1:1 में क्रिया शब्द ''सृष्टि की'' एकवचन में है बेशक कर्म के लिए यह बहुवचन संज्ञा है। इससे पवित्र शास्त्र को सोच समझकर लिखे जाने का प्रमाण मिलता है कि बहुवचन संज्ञा उस एक अर्थात परमेश्वर के लिए ही प्रयुक्त हुई है।

लगता है कि, पुराने समय के लोगों में अधिकारी के लिए बहुवचन रूप का इस्तेमाल किया जाता था। उत्पत्ति 42:30 में यूसुफ के बारे में बताने के लिए ''स्वामी'' शब्द का इस्तेमाल बहुवचन रूप में किया गया है। फिरौन के वर्णन के लिए बहुवचन रूपों का इस्तेमाल होता था और मूर्तिपूजक लोग एक ही देवता के बारे में बताने के लिए बहुवचन रूपों का इस्तेमाल करते थे। इन बहुवचनों से संख्या का नहीं बल्कि सम्मान तथा अधिकार का पता चलता था और इसका स्पष्ट इस्तेमाल बाइबल और इसके बाहर दोनों जगह किया जाता था। इस बात को समझते हुए, हमें हैरान नहीं होना चाहिए कि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की बात करने के लिए बहुवचन रूप का इस्तेमाल किया जाता है। परमेश्वर के लिए दूसरे पदनाम भी बहुवचन रूपों में मिलते हैं। अनुवादित शब्दों ''प्रभु'' (उत्पत्ति 15:2), ''परमपवित्र'' (नीतिवचन 9:10), ''सृजनहार'' (सभोपदेशक 12:1), और ''कर्त्ता'' (यशायाह 54:5) के लिए यही हुआ है।

परमेश्वरत्व की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। उत्पत्ति 1:2 में पवित्र आत्मा का निश्चयात्मक और उत्पत्ति 1:26; 3:22; 11:7 (यूहन्ना 1:1-3 देखिए) में अप्रत्यक्ष उद्धरण दिया गया है। परन्तु, वर्तमान जानकारी यही अनुमति देती है कि उत्पत्ति 1:1 में बहुवचन रूप एलोहीम के इस्तेमाल में परमेश्वरत्व का हवाला नहीं है। बल्कि, बहुवचन रूप से उस महान सृष्टिकर्त्ता को मिलने वाले सम्मान तथा महिमा का संकेत मिलता है।

**सृजनहार परमेश्वर**

ईश्वर अर्थात *एलोहीम* के विषय में बाइबल की पहली व्याख्या का सम्बन्ध उस शब्द से है जिसका अर्थ, ''सृष्टि करना'' होने पर अपने कर्त्ता अर्थात *बरा* (*bara'*) के लिए कोई मानवीय जीव नहीं है। मनुष्य उन वस्तुओं को जिन्हें परमेश्वर ने रचा है, रूप दे सकता है, ढाल सकता है और आवश्यकता के अनुसार लगा सकता है; परन्तु उनकी रचना केवल परमेश्वर ही कर सकता है, मनुष्य नहीं (देखिए यशायाह 65:17; आमोस 4:13)। मनुष्य काम आरम्भ करने के लिए लकड़ी मिलने पर फर्नीचर जैसा सामान बना सकता है, परन्तु ''पेड़ तो परमेश्वर ही बना सकता है।''

उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर द्वारा आरम्भ में सृष्टि की रचना करने के लिए किसी सामग्री के इस्तेमाल का उल्लेख नहीं है। हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य (उत्पत्ति 2:7) और पशुओं के शरीरों को रूप देने के लिए (उत्पत्ति 2:19) सामग्री (''मिट्टी'') लेकर काम किया, परन्तु हम इस बारे में कुछ नहीं जानते कि परमेश्वर भूमि की मिट्टी कहां से लाया था। इसका अर्थ यही है कि सृष्टि की रचना उसने शून्य से की थी। उसने कहा, और हो गया; उसने आज्ञा दी, और यह स्थिर हो गया (देखिए भजन संहिता 33:6; इब्रानियों 11:3)। परमेश्वर द्वारा सृष्टि की रचना करने और इसे बनाने के दोनों कामों अर्थात इसे रूप देने के कामों को करने के बारे में उसे *बोर,* (*Bore'*) ''सृजनहार'' (यशायाह 40:28); *ओसेह* (*'Oseh*); ''कर्त्ता'' (यशायाह 54:5); और *योत्सर* (*Yotser*) ''ढालने वाला या रूप देने वाला'' (''बनाने वाला''; यशायाह 45:11) कहा गया है।

इस प्रकार उत्पत्ति 1:1 में *एलोहीम* शब्द उस अकेले आराधना योग्य, सारी महिमा, आदर और अधिकार के योग्य, सारे संसार तथा मनुष्य को शून्य से बनाने में समर्थ की ओर संकेत करता है। परमेश्वर के इन चित्रणों से हमारा मन उसकी महिमा से भयभीत होकर उसके प्रति आदर तथा श्रद्धा दिखाने वाला बन जाना चाहिए। ''आओ हम झुककर दण्डवत करें, और अपने कर्त्ता यहोवा के साम्हने घुटने टेकें'' (भजन संहिता 95:6)।

## हा एलोहीम: ''परमेश्वर''

उत्पत्ति 5:22 में मूसा ने विशेष रूप से कहा कि हनोक हा एलोहीम जिसका मूल अर्थ ''परमेश्वर'' है, के साथ चलता था। इब्रानी शास्त्र में ''परमेश्वर'' शब्द से पहले उपपद (the) लग जाने से इसका अर्थ सामान्यत: ''the [एक ही सच्चा और जीवता] God'' बन जाता है।

अंग्रेज़ी बाइबल में पहली बार परमेश्वर के लिए ''God'' शब्द से पहले ''the'' मिलने से पहले, परमेश्वर के इकहत्तर हवाले दिए गए हैं। परमेश्वर के लिए बहत्तरवें हवाले में निश्चयात्मक उपपद शामिल करने का अवश्य ही कोई अच्छा कारण रहा होगा।

सृष्टि के आरम्भ के समय मूर्तियों, चित्रों और अन्य गाड़े गए देवताओं का अस्तित्व नहीं था, परन्तु मूर्तिपूजा मनुष्य जाति की बहुत बड़ी असफलता के रूप में बढ़ गई थी। इस तथ्य से कि मूसा ने स्पष्ट तौर पर बताया कि हनोक किस परमेश्वर की सेवा करता था, संकेत

मिलता है कि हनोक के समय तक मूर्तिपूजा एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी थी। दूसरे लोग चाहे जो भी कर रहे हों, परन्तु परमेश्वर के लिखारी ने उस एक सच्चे और जीवते परमेश्वर के प्रति हनोक की ईमानदारी के विषय में लिखा। आदम के सैकड़ों-हज़ारों वर्षों बाद ''परमेश्वर'' शब्द से पहले निश्चयात्मक उपपद का महत्व इस विचार पर भारी पड़ता है कि आठवीं शताब्दी के एकेश्वरवाद में तथाकथित आदि बहुदेववाद बढ़ गया था। इससे यह संकेत मिलता है कि आदि एकेश्वरवाद बहुदेववाद में विकृत हो गया था।

*हा एलोहीम* के पहली बार इस्तेमाल के एकदम बाद यह वाक्यांश उत्पत्ति के अगले अध्याय में पुन: आता है। हनोक के परपोते नूह के दिनों की घटनाओं का हवाला देते हुए, मूसा ने एक बार फिर ''परमेश्वर'' शब्द से पहले निश्चयात्मक उपपद का इस्तेमाल किया और स्पष्ट रूप से इस बार भी उसने इसका बहुत अधिक महत्व रखा। *हा एलोहीम* के पुत्रों अर्थात मूर्तिपूजा से इन्कार करने वालों और उस एक सच्चे परमेश्वर के प्रति वफ़ादार रहने वालों ने गलत दिशा पकड़ ली थी अर्थात वे बहुविवाही हो गए थे। ये लोग जिन्होंने बहुत से देवताओं को दण्डवत करने से तो इन्कार कर दिया था, परन्तु बहुत सी पत्नियों से विवाह करने से इन्कार न कर पाए थे। वे आदमी अपनी एक ही पत्नी के साथ एक तन होने की परमेश्वर की शिक्षा का उल्लंघन करके बहुत सी पत्नियों के साथ एक तन हो गए थे।

बड़ी सावधानी से लिखे गए इब्रानी शास्त्र का अर्थ है कि एकेश्वरवाद बहुदेववाद से पहले था अर्थात बहुदेववाद पहले नहीं था। हमें संकेत मिलता है कि मूर्तिपूजा के बढ़ जाने के बावजूद हनोक उस एक जीवते परमेश्वर के प्रति वफ़ादार रहा। बाद में, नूह के दिनों में, लगता है कि सच्चे परमेश्वर की शिक्षा को मानने वाले लोग उस नैतिकता से गिर गए थे।

## *एल एलयोन*: ''परमप्रधान परमेश्वर''

उत्पत्ति 14:18 में हमें परमेश्वर का एक और चित्रण मिलता है: ''तब शलेम का राजा मेल्कीसेदक, जो परमप्रधान ईश्वर [एल एलयोन] का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया।''

बाइबल में यहां पर पहली बार, परमेश्वर का वर्णन *एल* के रूप में हुआ है। सम्भवत: इसका मूल अर्थ ''सामर्थी'' या ''शक्तिवान'' है। परमेश्वर की सामर्थ के कारण इस शब्द का अर्थ ''परमेश्वर'' हो गया। हम देख चुके हैं कि परमेश्वर, अर्थात *एलोहीम* के पुराने नियम के पहले वर्णन का अर्थ ''आराधना योग्य'' है। अब हम एक और इब्रानी शब्द, एल पर आते हैं जो परमेश्वर के लिए ही है, परन्तु उसमें सामर्थ का भी संकेत है।

उत्पत्ति 14:18 में परमेश्वर के लिए *एल* के साथ हम एक और व्याख्यात्मक नाम जुड़ा हुआ पाते हैं जिसका अर्थ है ''सर्व सामर्थी,'' और वह ईश्वर अर्थात *एलयोन* की एक अन्य व्याख्या है। *एलयोन* शब्द का इस्तेमाल उसके लिए प्रासंगिक होता है जो महान, महिमा प्राप्त, सर्वोच्च और सबसे बड़ा है। इससे स्पष्ट है कि पुराने नियम में ईश्वर की यह व्याख्या उसके सामर्थी और महिमा प्राप्त होने की ओर ध्यान खींचती है।

ऊंचे और पवित्र स्थान पर परमेश्वर के निवास के बावजूद (यशायाह 57:15; 66:1),

उत्पत्ति 14:18 उसे एक राष्ट्रीय नेता, एक सेनापति के रूप में बताती है। इस प्रकार परमेश्वर को सर्वसत्ता पाए हुए दिखाया जाता है।

जहां पर परमेश्वर के पहले एल एलयोन, ''परमप्रधान परमेश्वर'' लगाया जाता है वहां उन दो विशेष क्षेत्रों का संकेत दिया जाता है जिन पर वह सामर्थी पूर्ण अधिकार रखता है। परमेश्वर की महिमा आकाश और पृथ्वी के स्वामी तथा उसके सम्भालने वाले के रूप में होती है। सर्वोच्च सेनापति होने के कारण वह चार राजाओं की सेनाओं को उखाड़ने के लिए सिपाहियों के रूप में केवल 318 नागरिकों के साथ ही जीत गया था (उत्पत्ति 14:14-16)।

परमेश्वर की सही व्याख्या उचित स्थान पर बड़े संक्षिप्त रूप में की गई है। उस सामर्थी का अपनी सम्पत्ति अर्थात आकाश और पृथ्वी सहित उनके सब निवासियों पर अधिकार था। चार विद्रोही सेनाओं की शक्ति न तो उसे डरा सकती थी और न ही हरा सकती है।

## *एल शद्दै*: ''सर्वशक्तिमान परमेश्वर''

प्रभु ने अब्राम के साथ अपने लिए एक और शब्द का इस्तेमाल किया था जिससे उसकी सामर्थ का पता चलता था। उत्पत्ति 17:1 में यह अभिव्यक्ति *एल शद्दै*, अर्थात ''सर्वशक्तिमान परमेश्वर'' पहली बार मिलती है।

परमेश्वर द्वारा अपने आपको *शद्दै* के रूप में दिखाने के कारण काफी कठिनाई हुई है, क्योंकि स्पष्टत: यह शब्द उस क्रिया से निकला है जिसका अर्थ है ''बल प्रयोग करना, सर्वनाश करना, बर्बाद करना।'' परन्तु *शद्दै* के इस पहले इस्तेमाल का संदर्भ किसी हिंसा या सर्वनाश के बारे में कुछ नहीं दिखाता बल्कि इसमें केवल परमेश्वर की उस योग्यता के बारे में पता चलता है जो उसने अपने बारे में कही थी। संदर्भ में हम देखते हैं कि *एल शद्दै* सौ वर्ष के बूढ़े पिता को पुत्र दे सकता था, 90 वर्ष की एक बांझ और पुत्रहीन स्त्री को (यशायाह 54:1) मां बना सकता था, और इब्राहीम और सारा से जातियां उत्पन्न कर सकता था। *एल शद्दै* ने प्रतिज्ञा की, ''और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा और तुझको जाति-जाति का मूल बना दूंगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे'' (उत्पत्ति 17:6)।

नि:संदेह *शद्दै* सामर्थ और शक्ति का संकेत है, परन्तु स्पष्टत: हर बार विनाश और बर्बादी के लिए नहीं। पवित्र शास्त्र में इस शब्द के आरम्भिक इस्तेमाल के संदर्भ से इसके सामान्य अनुवाद ''सर्वशक्तिमान'' पर विश्वास होने लगता है। परमेश्वर की शक्ति के बराबर कोई भी शक्ति नहीं है। इसलिए पृथ्वी के नीचे, या पृथ्वी पर या उसके ऊपर सब उसकी आज्ञा मानने वाले और उससे आज्ञा लेने वाले होने चाहिए जिसने अब्राम को बताया था कि, ''मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूं।''

परमेश्वर को सर्वशक्तिमान जानकर अब्राम *एल शद्दै* के किसी भी आश्वासन पर भरोसा कर सकता था। अब्राम जान सकता था कि ऐसा परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा अवश्य पूरी करेगा। इसलिए उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर ''जो मरे हुओं को जिलाता है और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसे लेता है, कि मानों वे हैं'' की सामर्थ पर भरोसा करके अब्राम ''ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया ... कि वह बहुत सी जातियों का पिता हो''

(रोमियों 4:17, 18)।

बहुत सी कठिनाइयों और लगभग दो हज़ार वर्षों के बाद, प्रभु ने, जो अपना वायदा कभी नहीं भूलता, अपनी दुर्लभ बुद्धि से कई जातियों का पिता बनाने की इब्राहीम के साथ की गई प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए काम को आगे बढ़ाया। जो लोग मसीह के हैं, वे चाहे किसी भी जाति या लहू से हों, इब्राहीम के वंश हैं और प्रतिज्ञा के अनुसार अधिकारी भी (गलतियों 3:26-39)। परमेश्वर ने अपने आपको *एल शद्दै,* अर्थात ''सर्वशक्तिमान परमेश्वर'' के रूप में प्रमाणित कर दिया है।

## *एल ओलाम*: ''सनातन परमेश्वर''

अपनी सामर्थ की तरह ही परमेश्वर की समय सीमा भी नहीं है। उत्पत्ति 21:33 में उसे दिए गए नाम *एल ओलाम,* अर्थात ''सनातन परमेश्वर'' से यह बात सामने आती है।

*ओलाम* शब्द उस क्रिया से निकला है जिसका अर्थ ''छुपाना, गुप्त रखना'' है। सिद्धांत में, *ओलाम* का अर्थ ''छुपा हुआ समय,'' ''एक अनिश्चित समय,'' या ''एक असीमित समय'' हो सकता है। संदर्भ से ही पता चलता है कि एक *ओलाम* समय कितना असीमित है।

### कई बार *ओलाम* सीमित होता है

लगभग जहां भी *ओलाम* शब्द का इस्तेमाल होता है उससे स्पष्ट पता चलता है कि उस अर्थ में उसकी कितनी सीमा रखी गई है। उदाहरण के लिए, गिनती 10:8 में हारून की याजकाई में याजकों को *ओलाम* नियम के अनुसार तुरही बजानी होती थी (''पीढ़ी से पीढ़ी'')। उस नियम की घोषणा के बाद से, हारून की याजकाई भी समाप्त हो चुकी है। उसी प्रकार, पवित्र स्थान पर जाने से पहले हौज में हाथ और पांव धोना (निर्गमन 30:21) *ओलाम* (निरन्तर, सदा के लिए) होने की आज्ञा दी गई थी; परन्तु हौज़, पवित्र स्थान, और याजक तो सदियों से खत्म हो चुके हैं।

उसी प्रकार खतना (उत्पत्ति 17:10; गलतियों 6:15 भी देखिए) और सब्त का दिन (निर्गमन 31:16; कुलुस्सियों 2:16 भी देखिए) मछली के पेट में योना के रहने की तरह (योना 2:6) *ओलाम* (सदा के लिए) थे। इसलिए, कई बार पवित्र शास्त्र स्वयं ही दिखाता है कि *ओलाम* की बात अल्प-अवधि के लिए हो सकती है।

### परमेश्वर को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता

*एल ओलाम* अर्थात ''सनातन परमेश्वर'' को कभी किसी प्रकार की सीमा में नहीं बांधा गया। वह अनन्तकाल में निवास करता है (यशायाह 57:15), वह अनन्तकाल से अनन्तकाल तक है (भजन संहिता 90:1, 2) और अविनाशी है (1 तीमुथियुस 6:16)! वह सनातन चट्टान (यशायाह 26:4) और अति प्राचीन (दानिय्येल 7:9) है।

### परमेश्वर के स्वभाव को किसी सीमा में नहीं रखा जा सकता

जैसे परमेश्वर स्वयं समय विहीन है, वैसे ही उसके *ओलाम* (अनन्त) स्वभाव पर कोई सीमा नहीं लगाई जाती। उसका नाम (निर्गमन 3:15), उसका प्रेम (यिर्मयाह 31:3), उसकी करुणा (भजन संहिता 103:17), उसकी महिमा (भजन संहिता 104:31), उसकी सच्चाई (भजन संहिता 117:2) और उसका धर्म (भजन संहिता 119:142) सदा-सदा के लिए हैं।

### उसके पुत्र पर कोई सीमा नहीं लगाई जा सकती

जो बातें परमेश्वर पिता के लिए सत्य हैं, प्राचीन काल अर्थात *ओलाम* अर्थात अनन्तकाल से ही वही बातें पुत्र के लिए भी सत्य हैं (मीका 5:2)। यीशु मसीह को स्वयं ''अनादि पिता'' (यशायाह 9:6) कहा गया है जिसके दिनों का कोई अन्त नहीं है (इब्रानियों 1:10-12)। वह कल, आज और युगानुयुग एक सा है (इब्रानियों 13:8)।

मसीह से सम्बन्धित असीमित अनन्तकाल दिखाता है कि पिता/पुत्र की भाषा केवल दृष्टांतात्मक है, क्योंकि कोई पुत्र अपने पिता की आयु के बराबर नहीं हो सकता है। फिर, यदि यीशु मानवीय शब्दों के अनुसार मूल रूप से एक पुत्र होता, तो उसके लिए एक ईश्वरीय माता की भी आवश्यकता होती। यद्यपि मरियम यीशु की शारीरिक माता थी, परन्तु *लोगोस* अर्थात शब्द के रूप में जो कि परमेश्वर था, उसका अस्तित्व मरियम से पहले था (यूहन्ना 1:1-3)।

इसलिए, ज़रूरी है कि पिता/पुत्र का सम्बन्ध सांकेतिक अर्थ में लिया जाए। मसीह को ''अनन्तकाल से इकलौता'' कहना अपने आप में विरोधाभास दिखाता है; वास्तव में, अंग्रेज़ी अनुवादों में ''begotten'' शब्द एक अशुद्ध अनुवाद है।[5] फिर, यदि परमेश्वरत्व एक मानवीय परिवार की तरह है तो पवित्र आत्मा का स्थान ऐसा है जिसके बारे में इस परिवार को कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए जब तक कोई मसीह पर समय सीमा नहीं लगाता तब तक परिवार की भाषा को केवल उदाहरणों के लिए ही रखा जाना चाहिए।

### परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले जीवन पर सीमा नहीं लगाई जा सकती

अदन के बाग से निकाले जाने के समय मनुष्य के जीवन की सीमा तय कर दी गई थी। अब वह ''जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ के'' (उत्पत्ति 3:22) खा नहीं सकता था। यीशु मसीह ने जो बिना किसी सीमा के सदा से जीवित है, मनुष्य को पहले वाला स्थान दिलाया, अर्थात उसने जीवन के वृक्ष तक जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, उसे दोबारा पहुंचाया (प्रकाशितवाक्य 2:7)। ऐसा जीवन अन्तिम दिन जी उठने पर ही आता है (यूहन्ना 6:40)। अनन्त जीवन जिसे परमेश्वर ने अपने पुत्र में रखा है (1 यूहन्ना 5:11) वैसा ही अनन्त है जैसा स्वयं पुत्र है अर्थात वह कभी मरने वाला नहीं (लूका 20:36; देखिए यूहन्ना 3:16), वह अविनाशी और अमर है (रोमियों 2:7; 1 कुरिन्थियों 15:51-55)।

**आज्ञा न मानने वालों के दुख की कोई समय सीमा नहीं लगाई जा सकती**

कुछ लोगों के लिए दुखद बात यह है कि विरोध करने और सच्चाई को न मानने वालों के कष्ट तथा दण्ड के समय की कोई सीमा नहीं है (रोमियों 2:8)। जैसे स्वर्ग में परमेश्वर के साथ ''अनन्तकाल'' का जीवन है, वैसे ही शैतान और उसके दूतों के साथ नरक में कष्ट भोगना भी है (मत्ती 25:41, 46; 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-9)। मानवीय जीवों ने नरक को समय सीमा में बांधने की कल्पना की है, जबकि स्वर्ग के समय की नहीं। परन्तु, जिस बाइबल में यह सिखाया गया है कि स्वर्ग में समय का अन्त नहीं होगा, उसी में यह भी सिखाया गया है कि नरक कभी समाप्त नहीं होगा। दुष्ट लोगों के, अनाज की तरह जलने के उदाहरण को, जिसमें न उनकी जड़ और न डालियां बचीं अक्षरश: लेने वाला (मलाकी 4:1), मृत्यु के बाद उस धनी आदमी के कष्ट के इतिहास को ठुकराने पर बाध्य हो जाता है (लूका 16)। मृत्यु के बाद शरीर का विनाश तो होता है, परन्तु आत्मा का नहीं। नरक के समय के सीमित होने की बात करने वाला स्वर्ग के समय को भी सीमित कर देता है।

पवित्र शास्त्र में स्पष्ट है कि *ओलाम* अर्थात ''अनन्तकाल'' शब्द का इस्तेमाल कभी-कभी संदर्भ की सीमाओं में किया जाता है। परन्तु, बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व, मसीह, परमेश्वर के गुणों, उस जीवन पर जो वह देता है, या उस दण्ड पर जो वह देने वाला है, कोई सीमा नहीं लगाती। इब्राहीम ने जब वेदी बनाई और उसे अनादि परमेश्वर के सामने समर्पित कर दिया तो उसे विश्वास था कि वह भी किसी अच्छे अर्थात स्वर्गीय देश में अनन्तकाल तक रहेगा (इब्रानियों 11:14, 15)।

---

पाद टिप्पणियां

[1]सी. एल. सेओ, *ए ग्रामर फ़ॉर बिबलिकल हिब्रू।* [2]यद्यपि *एलोहीम* (''ईश्वरों'') का निकलना आराधना की किसी वस्तु की ओर संकेत तो करता है, परन्तु यह शब्द स्वर्गदूतों (तुलना भजन संहिता 8:5; इब्रानियों 2:7), मानवीय न्यायाधीशों तथा शासकों (निर्गमन 22:8, 9, 28; 1 शमूएल 28:13) और मानवीय जीवों के लिए प्रयुक्त होने लगा (भजन 82:6; यूहन्ना 10:34)। [3]''ईश्वर'' *एलोह* के लिए एकवचन शब्द पुराने नियम में बहुत कम अर्थात केवल 57 बार मिलता है, जबकि इसका बहुवचन रूप *एलोहीम* 2,570 बार मिलता है। [4]इब्रानी और अंग्रेज़ी की तरह हिन्दी की बाइबल में इब्रानियों 9:5 में ''करूब'' का बहुवचन रूप ही दिया गया है। [5]*मोनोजीनस* (इकलौता) (यूहन्ना 1:14, 18; 3:16, 18; 1 यूहन्ना 4:9) मूलत: ''only begotten'' नहीं बल्कि ''अपनी ही प्रकार का केवल एक, अर्थात विलक्षण'' है।

## *एल-एलोहि-यिसराएल*: ''परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है''

उत्पत्ति 33:20 में याकूब ने परमेश्वर को एक विशेष नाम *एल-एलोहि-यिसराएल* अर्थात ''परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है'' दिया। शकेम के नगर में सुरक्षित पहुंचकर याकूब ने एक वेदी बनाई और परमेश्वर के सम्मान में इसका यह नाम रख दिया (उत्पत्ति 33:18-20)।

जन्म के समय याकूब अपने भाई एसाव की एड़ी पकड़े हुए था। उसी कारण उसका नाम याकूब रखा गया था, जिसका अर्थ है ''एड़ी पकड़ने वाला।'' छीन लेना, कपटपूर्ण स्वभाव याकूब की विशेषता थी। उसने एसाव से चालाकी करके अपने पिता से उसका अधिकार ले लिया था। फिर उसने अपने पिता याकूब से धोखा करके वह आशीष भी पा ली थी जिसे इसहाक एसाव को देने वाला था। जीवन के प्रारम्भिक चालीस वर्षों तक, याकूब एड़ी खींचने वाला अर्थात एक धोखेबाज़ ही था। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि एसाव उससे घृणा करता था और अपने चालबाज भाई की हत्या करने के लिए कृतसंकल्प था।

अपने भाई के क्रोध से बचने के लिए याकूब उसके सामने से दुखी होकर भाग गया (उत्पत्ति 27:41-44; 28:5)। बाद में, जब वह लूज़ नगर में लेटा हुआ था, तो प्रभु ने उसे दर्शन दिया जिससे उसे बड़ी सांत्वना मिली (उत्पत्ति 35:6-15)। स्पष्टत:, याकूब ने अपने पापों से मन फिराया और प्रभु की सेवा करने की मन्नत मानी। अपने दिमाग़ में वही मन्नत लेकर वह लगभग बीस वर्षों तक सीरिया में रहा। चालाकी और धोखे के अपने स्वभाव के स्थान पर उसने ईमानदार होने की पूरी कोशिश की। लाबान के झुण्डों की रखवाली करते हुए उसे उन की हानि उठानी पड़ी ''जिसे वनैले जन्तुओं ने फाड़ डाला'' (उत्पत्ति 31:39)। याकूब अब एक बदला हुआ आदमी था। सचमुच वह परिवर्तित हो चुका था और उसने उसी के अनुसार शेष जीवन बिताने की पूरी कोशिश की।

अभी भी एसाव से भयभीत, नया जीवन पाया हुआ यह आदमी जब फलस्तीन की ओर लौट रहा था तो उसके विचार एक धोखेबाज के नहीं बल्कि करुणा और प्रार्थना भरे थे। उसने प्रभु के सामने बिनती करके कहा ''मेरी बिनती सुनकर मुझे मेरे भाई एसाव के हाथ से बचा'' (उत्पत्ति 32:11)।

मनुष्य के रूप में आए परमेश्वर से रात भर कुश्ती करने के बाद प्रभु ने याकूब का नाम बदल दिया। अपने जीवन के पिछले बीस वर्षों तक, ''याकूब'' नाम के कारण उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ था। इसलिए, परमेश्वर ने अब उसे *यिसराएल,* अर्थात ''इस्राएल'' कहा, जिसका अर्थ है ''परमेश्वर के साथ कुश्ती करने वाला।'' याकूब के नये नाम के साथ, प्रभु ने कहा कि इसका अर्थ है ''तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है'' (उत्पत्ति 32:28)। ''इस्राएल'' शब्द का अर्थ ''परमेश्वर का राजकुमार'' हो गया।

यह बदला हुआ व्यक्ति, जो अब परमेश्वर का राजकुमार था, एसाव के साथ मिलकर

प्रसन्न था और कनान की शांति में प्रवेश कर गया था। उसने भूमि का एक टुकड़ा लेकर बड़ी विनम्रता से वहां परमेश्वर के लिए एक वेदी बनाई। बिल्कुल ठीक, उसने इसे *एल-एलोहि-यिसराएल,* अर्थात ''सामर्थी, आराध्य, राजकुमार का सामर्थी'' नाम दिया।

*एल-एलोहि-यिसराएल* नामक वेदी पर पहला बलिदान करते हुए याकूब ने महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण आराधना का अनुभव किया। इस्राएल को भरोसा था कि परमेश्वर ने उसकी सम्भाल के लिए उसे सब बुराइयों से छुड़ाने और कनान में सुरक्षित वापस ले जाने के लिए एक स्वर्गदूत को ठहराया था (उत्पत्ति 48:16)।

## *एल बेथेल*: ''बेथेल का परमेश्वर''

उत्पत्ति 35:7 में इस्राएल ने परमेश्वर के सम्मान में एक और वेदी, *एल-बेथेल* अर्थात ''बेथेल का परमेश्वर'' बनाई।

इस्राएल शकेम से अपनी यात्रा जारी रखते हुए वहीं पहुंचा, जहां पर *एल-एलोहि-यिसराएल* वेदी अर्पित की थी और उसे अकेला, निराश और पवित्र पुरुष होने के लिए परमेश्वर की ओर से सांत्वना दी गई थी। इस स्थान का नाम लूज था जिसे बदलकर याकूब ने बेथेल कर दिया था जिसका अर्थ है ''परमेश्वर का घर।'' बीस वर्षों के बाद, वापसी के समय इस्राएल ने परमेश्वर के दर्शन तथा प्रतिज्ञा की सराहना के लिए एक और वेदी बना दी। उसने इसे *एल-बेथेल* कहा जिसका अर्थ है ''बेथेल का परमेश्वर।'' उसी परमेश्वर ने जिसने इस्राएल को पहले बेथेल में दर्शन दिया था और उसकी सम्भाल करने की प्रतिज्ञा की थी, अपना वचन निभाया था। इस्राएल शांति से फिर से वहीं पर चला गया जहां से उसने आरम्भ किया था। उसका मन धन्यवाद से भरा था। *एल-बेथेल* पर बलिदान भेंट करते हुए, कृतज्ञता और परमेश्वर का आभार मानते हुए इस्राएल ने एक और आराधना का अनुभव किया।